

سُورَةُ الْحَشْرِ

Surah 59 — Al-Hashr (The Exile) • Medinan • 24 Ayahs • Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ سَبِّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ

जो चीज़ आसमानों में है और जो चीज़ ज़मीन में है (सब) खुदा की तस्बीह करती हैं और वही शालिब हिकमत वाला है

2

هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ ۚ مَا
ظَنَنْتُمْ أَنْ يَخْرُجُوا ۚ ۚ وَظَنُّوا ۚ أَنَّهُمْ مَانِعَتُهُمْ حُصُونُهُمْ مِنَ اللَّهِ فَأَتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ
حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوا ۚ ۚ وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ ۚ يُخْرِبُونَ بُيُوتَهُمْ بِأَيْدِيهِمْ وَأَيْدِ
الْمُؤْمِنِينَ فَاغْتَبَرُوا ۚ يَأْوِلُوا إِلَى الْآبُسِ

वही तो है जिसने कुफ़ार अहले किताब (बनी नुजैर) को पहले हश्र (ज़िलाए वतन) में उनके घरों से निकाल बाहर किया
(मुसलमानों) तुमको तो ये वहम भी न था कि वह निकल जाएँगे और वह लोग ये समझे हुये थे कि उनके किले उनको खुदा (के
अज़ाब) से बचा लेंगे मगर जहाँ से उनको ख्याल भी न था खुदा ने उनको आ लिया और उनके दिलों में (मुसलमानों) को रौब
डाल दिया कि वह लोग खुद अपने हाथों से और मोमिनीन के हाथों से अपने घरों को उजाड़ने लगे तो ऐ आँख वालों इबरत
हासिल करो

3

وَلَوْلَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَاءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ۚ وَلَهُمْ فِي آخِرَةِ عَذَابٌ
النَّارِ

और खुदा ने उनकी किसमत में ज़िला वतनी न लिखा होता तो उन पर दुनिया में भी (दूसरी तरह) अज़ाब करता और आखिरत में
तो उन पर जहन्नुम का अज़ाब है ही

4

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا ۚ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ وَمَنْ يُشَاقِّ اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ

ये इसलिए कि उन लोगों ने खुदा और उसके रसूल की मुखालेफ़त की और जिसने खुदा की मुखालेफ़त की तो (याद रहे कि) खुदा बड़ा सख्त अज़ाब देने वाला है

5

مَا قَطَعْتُمْ مِنْ لِيْنَةٍ أَوْ تَرَكَتُمُوهَا قَائِمَةً عَلَىٰ أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيُخْزِيَ الْفَاسِقِينَ

(मोमिनो) खजूर का दरख्त जो तुमने काट डाला या जूँ का तँ से उनकी जड़ों पर खड़ा रहने दिया तो खुदा ही के हुक्म से और मतलब ये था कि वह नाफरमानों को रूसवा करे

6

وَمَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ ۚ مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ ۚ وَلَا رِكَابٍ ۚ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهُ ۚ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ

(तो) जो माल खुदा ने अपने रसूल को उन लोगों से बे लड़े दिलवा दिया उसमें तुम्हारे हक नहीं क्योंकि तुमने उसके लिए कुछ दौड़ धूप तो की ही नहीं, न घोड़ों से न ऊँटों से, मगर खुदा अपने पैग़म्बरों को जिस पर चाहता है ग़लबा अता फरमाता है और खुदा हर चीज़ पर कादिर है

7

مَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ ۚ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ فَلِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ كَىٰ لَا يَكُونَ دُولَةً ۚ بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ ۚ وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ

तो जो माल खुदा ने अपने रसूल को देहात वालों से बे लड़े दिलवाया है वह खास खुदा और उसके रसूल और (रसूल के) कराबतदारों और यतीमों और मोहताजों और परदेसियों का है ताकि जो लोग तुममें से दौलतमन्द हैं हिर फिर कर दौलत उन्हीं में न रहे, हाँ जो तुमको रसूल दें दें वह ले लिया करो और जिससे मना करें उससे बाज़ रहो और खुदा से डरते रहो बेशक खुदा सख्त अज़ाब देने वाला है

لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ الَّذِينَ أُخْرِجُوا ۖ مِنْ دِيَرِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُونَ فَضْلًا ۖ مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا ۖ وَيَنْصَرُّونَ إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ أَوْ لَّئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ

(इस माल में) उन मुफलिस मुहाजिरों का हिस्सा भी है जो अपने घरों से और मालों से निकाले (और अलग किए) गए (और) खुदा के फ़ज़ल व खुशनूदी के तलबगार हैं और खुदा की और उसके रसूल की मदद करते हैं यही लोग सच्चे ईमानदार हैं और (उनका भी हिस्सा है)

وَالَّذِينَ تَبَوَّءُوا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً ۖ مِمَّا أُوتُوا ۚ وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ وَمَنْ يُوقِ شُحَّ نَفْسِهِ ۚ فَأُو۟لَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ

जो लोग मोहाजेरीन से पहले (हिजरत के) घर (मदीना) में मुक़ीम हैं और ईमान में (मुसतक़िल) रहे और जो लोग हिजरत करके उनके पास आए उनसे मोहब्बत करते हैं और जो कुछ उनको मिला उसके लिए अपने दिलों में कुछ ग़रज़ नहीं पाते और अगरचे अपने ऊपर तंगी ही क्यों न हो दूसरों को अपने नफ्स पर तरजीह देते हैं और जो शरूष अपने नफ्स की हिस् से बचा लिया गया तो ऐसे ही लोग अपनी दिली मुरादे पाएँगे

وَالَّذِينَ جَاءُوا مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا ۚ لِلَّذِينَ ءَامَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ

और उनका भी हिस्सा है और जो लोग उन (मोहाजेरीन) के बाद आए (और) दुआ करते हैं कि परवरदिगार हमारी और उन लोगों की जो हमसे पहले ईमान ला चुके मग़फ़ेरत कर और मोमिनों की तरफ से हमारे दिलों में किसी तरह का कीना न आने दे परवरदिगार बेशक तू बड़ा शफीक़ निहायत रहम वाला है

﴿ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نَافَقُوا ﴾ يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا ﴿ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَئِنْ أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِيكُمْ أَحَدًا أَبَدًا ﴾ ۝ وَإِنْ قُوتِلْتُمْ لَنَنصُرَنَّكُمْ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ

क्या तुमने उन मुनाफ़िकों की हालत पर नज़र नहीं की जो अपने काफ़िर भाइयों अहले किताब से कहा करते हैं कि अगर कहीं तुम (घरों से) निकाले गए तो यक़ीन जानों कि हम भी तुम्हारे साथ (ज़रूर) निकल खड़े होंगे और तुम्हारे बारे में कभी किसी की इताअत न करेंगे और अगर तुमसे लड़ाई होगी तो ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे, मगर खुदा बयान किए देता है कि ये लोग यक़ीनन झूठे हैं

لَئِنْ أُخْرِجُوا ﴿ لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَئِنْ قُوتِلُوا ﴾ لَا يَنْصُرُونَهُمْ وَلَئِنْ نَصَرُوهُمْ لَيُولَيَنَّ الْأَدْبَرَ ثُمَّ لَا يُصَرُّونَ

अगर कुफ़ार निकाले भी जाएँ तो ये मुनाफ़ेकीन उनके साथ न निकलेंगे और अगर उनसे लड़ाई हुई तो उनकी मदद भी न करेंगे और यक़ीनन करेंगे भी तो पीठ फेर कर भाग जाएँगे

لَأَنْتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً ﴿ فِي صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ ﴾ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ ﴿ لَا يَفْقَهُونَ

फिर उनको कहीं से कुमक भी न मिलेगी (मोमिनों) तुम्हारी हैबत उनके दिलों में खुदा से भी बढ़कर है, ये इस वजह से कि ये लोग समझ नहीं रखते

لَا يُقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قُرَىٰ ﴿ مُحَصَّنَةٍ أَوْ مِنْ وَرَاءِ جُدُرٍ ﴾ ۝ بِأَسْهُمٍ بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ ﴿ ۝ تَحْسِبُهُمْ جَمِيعًا ۝ وَقُلُوبُهُمْ شَتَّىٰ ﴿ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ ﴿ لَا يَعْقِلُونَ

ये सब के सब मिलकर भी तुमसे नहीं लड़ सकते, मगर हर तरफ से महफूज़ बस्तियों में या (शहर पनाह की) दीवारों की आड़ में इनकी आपस में तो बड़ी धाक है कि तुम ख्याल करोगे कि सब के सब (एक जान) हैं मगर उनके दिल एक दूसरे से फटे हुए हैं ये इस वजह से कि ये लोग बेअकल हैं

كَمَثَلِ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ﴿ ۝ ذَاقُوا ۝ وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿

उनका हाल उन लोगों का सा है जो उनसे कुछ ही पेशतर अपने कामों की सज़ा का मज़ा चख चुके हैं और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है

16

كَمَثَلَ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسَانِ اكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِّنكَ إِنِّي أَخَافُ
اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ

(मुनाफ़िकों) की मिसाल शैतान की सी है कि इन्सान से कहता रहा कि काफ़िर हो जाओ, फिर जब वह काफ़िर हो गया तो कहने लगा मैं तुमसे बेज़ार हूँ मैं सारे जहाँ के परवरदिगार से डरता हूँ

17

فَكَانَ عِقَبَتُهُمَا أَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَذَلِكَ جَزَاءُ ٱلْظَّالِمِينَ

तो दोनों का नतीजा ये हुआ कि दोनों दोज़ख में (डाले) जाएँगे और उसमें हमेशा रहेंगे और यही तमाम ज़ालिमों की सज़ा है

18

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌۢ بِمَا تَعْمَلُونَ

ऐ ईमानदारों खुदा से डरो, और हर शख्स को ग़ौर करना चाहिए कि कल क़यामत के वास्ते उसने पहले से क्या भेजा है और खुदा ही से डरते रहो बेशक जो कुछ तुम करते हो खुदा उससे बाख़बर है

19

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنسَاهُمْ أَنفُسَهُمْ ۚ أُو۟لَٰئِكَ هُمُ ٱلْفَٰسِقُونَ

और उन लोगों के जैसे न हो जाओ जो खुदा को भुला बैठे तो खुदा ने उन्हें ऐसा कर दिया कि वह अपने आपको भूल गए यही लोग तो बद किरदार हैं

20

لَا يَسْتَوِي ٱلْأَصْحَابُ ٱلنَّارِ وَٱلْأَصْحَابُ ٱلْجَنَّةِ ۚ أَصْحَابُ ٱلْجَنَّةِ هُمُ ٱلْفَٰئِزُونَ

जहन्नुमी और जन्नती किसी तरह बराबर नहीं हो सकते जन्नती लोग ही तो कामयाबी हासिल करने वाले हैं

21

لَوْ أَنزَلْنَا هَٰذَا ٱلْقُرْءَانَ عَلَىٰ جَبَلٍ ۖ لَّرَأَيْنَاهُ خَٰشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۚ وَتِلْكَ ٱلْأَمْثَلُ نُضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ

अगर हम इस कुरान को किसी पहाड़ पर (भी) नाज़िल करते तो तुम उसको देखते कि खुदा के डर से झुका और फटा जाता है ये मिसालें हम लोगों (के समझाने) के लिए बयान करते हैं ताकि वह ग़ौर करें

22

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ

वही खुदा है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं, पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला वही बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

23

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ
الْمُتَكَبِّرُ ۚ سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ

वही वह खुदा है जिसके सिवा कोई क़ाबिले इबादत नहीं (हकीक़ी) बादशाह, पाक ज़ात (हर ऐब से) बरी अमन देने वाला निगेहबान, ग़ालिब ज़बरदस्त बड़ाई वाला ये लोग जिसको (उसका) शरीक ठहराते हैं उससे पाक है

24

هُوَ اللَّهُ الْخَلِيقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ ۚ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى ۚ يُسَبِّحُ لَهُ ۚ مَا فِي
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

वही खुदा (तमाम चीज़ों का ख़ालिक) मुजिद सूरतों का बनाने वाला उसी के अच्छे अच्छे नाम हैं जो चीज़े सारे आसमान व ज़मीन में हैं सब उसी की तसबीह करती हैं, और वही ग़ालिब हिकमत वाला है